SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

ब्रिटिश शिक्षा पद्धति और समाज सुधारको का योगदान

जितेश कुमार, इतिहास विभाग
इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय, मीरपुर, रेवाडी, हरियाणा, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
जितेश कुमार

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 23/10/2023
Revised on : -----
Accepted on : 31/10/2023
Plagiarism : 08% on 23/10/2023

शोध सार

शिक्षा का राष्ट्र के निर्माण और उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान होता है। ब्रिटिश, भारत में व्यापार करने के उद्देश्य से आए थे लेकिन उनकी साम्राज्यवादी सोच ने भारत की संपूर्ण राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक स्थिति को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया। शिक्षा व्यक्तियों की मानसिकता को बदलकर सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं, इसलिए अंग्रेजो द्वारा नई शिक्षा प्रणाली को लागू किया गया, जो औपनिवेशिक हितो से परिचालित थी, क्योंकि इस शिक्षा प्रणाली के तहत अंग्रेजो को ऐसे भारतीय लोग चाहिए थे, जो आचार–विचार में एकदम अंग्रेज हो (क्लाउड मार्कोविट्स)। इसी शिक्षा प्रणाली की खामियों को दूर करने के लिए भारतीय महान समाज सुधारकों ने अपना योगदान दिया। वर्तमान शोध पत्र उस ब्रिटिश औपनिवेशिक काल में कुछ शैक्षिक चिंताओं पर चर्चा करने और साथ ही, राजा राम मोहन रॉय और ईश्वर चंद्र विद्यासागर (सिकदर पी और हलदर टी, 2020) जैसे भारतीय महान समाज सुधारकों के योगदान का पता लगाने का एक प्रयास है।

मुख्य शब्द

1813 का चार्टर एक्ट, प्राच्यवादी–पाश्चात्यवादी विवाद, शिक्षा, मैकाले मिनट, वुड्स डिस्पैच.

औपनिवेशिक काल में भारत में शिक्षा पद्धति

चार्टर अधिनियम, 1813

औपनिवेशिक हितों की पूर्ति करने की नीतियों का सीधा असर भारतीय शिक्षा पर पड़ा, क्योंकि वे भारतीयों के विकास को लेकर नीति निर्धारण नहीं कर रहे थे लेकिन फिर भी भारत में अपनी शक्ति को मजबूत करने के लिए शिक्षा उनकी चिंता में शामिल थी। लॉर्ड मिंटो ने अपनी रिपोर्ट (मिंटो मिनट) में भारतीय ज्ञान को सुरक्षित

करने के लिए कंपनी से वित्तीय सहायता की अपील की(एल. सी द्विवेदी)। इस एक्ट में भारतीयो की शिक्षा के लिए कंपनी द्वारा प्रतिवर्ष एक लाख रुपये की राशि स्वीकृत की गई। इसे भारतीय शिक्षा के संदर्भ पहली बार ब्रिटिश संसद ने भारतीयों को शिक्षित करने के महत्व को पहचाना (वेनिला, 2018)।

प्राच्यवादी पाश्चात्यवादी विवाद

1813 के चार्टर एक्ट में, भारत में स्थानीय विद्वानों को प्रोत्साहित करने और आधुनिक शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कंपनी द्वारा प्रतिवर्ष 1 लाख रुपये प्रदान करने का प्रावधान रखा गया था, किंतु, इस राशि को खर्च करने के प्रश्न पर विवाद हो जाने के कारण यह राशि उपलब्ध नहीं कराई गई।

वस्तुतः 'लोक शिक्षा समिति' में दो दल थे। आंग्ल पक्ष शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी को बनाए रखने पर जोर दे रहा था, तो प्राच्य पक्ष शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषा को बनाए रखने पर जोर दे रहा था (रणजीत गुहा, 2015)।

प्राच्यवादियों में विलियम जोन्स, जेम्स प्रिंसेप, चार्ल्स विल्किंस, एचएच विल्सन आदि शामिल थे, जबकि पाश्चात्यवादी शिक्षा के समर्थन में टीबी मैकाले, जेम्स मिल, चार्ल्स ग्राट, विलियम विल्बरफोर्स आदि शामिल थे।

मैकाले मिनट (1835)

1835 में लॉर्ड मैकाले ने अपना प्रसिद्ध स्मरण पत्र (Minute) गवर्नर जनरल की परिषद के समक्ष प्रस्तुत किया जिसे लॉर्ड विलियम बैंटिक ने स्वीकार करते हुए अंग्रेजी शिक्षा अधिनियम, 1835 पारित किया। प्राच्य शिक्षा के बारे में मैकाले का यह कथन कि ''एक अच्छे यूरोपीय पुस्तकालय का एक शेल्फ ही भारत और अरब के समूचे साहित्य के बराबर है।'' पूरे प्राच्यवादी साहित्य को निम्न श्रेणी में रखता है (रविन्द्र मिश्राः मैकाले मिनट और भारतीय शिक्षा)। इसके तहत पाश्चात्य शिक्षा का समर्थन करते हुए यह प्रावधान किया गया कि सरकार के सीमित संसाधनों का प्रयोग पश्चिमी विज्ञान तथा साहित्य के अंग्रेजी में अध्यापन हेतु किया जाए। सरकार स्कूल तथा कॉलेज स्तर पर शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी करे तथा इसके विकास के लिये कई प्राथमिक विद्यालयों के स्थान पर कुछ स्कूल तथा कॉलेज खोले जाए। मैकाले ने इसके तहत अधोगामी निस्पंदन का सिद्धांत दिया जिसके तहत भारत के उच्च तथा मध्यम वर्ग के एक छोटे से हिस्से को शिक्षित करना था ताकि एक ऐसा वर्ग तैयार हो जो रंग और खून से भारतीय हो लेकिन विचारों, नैतिकता तथा बुद्धिमत्ता में ब्रिटिश हो (गोपीचंद)।

वुड्स डिस्पैच (1854)

वुड्स डिस्पैच (1854) भारतीय शिक्षा के इतिहास में एक मील का पत्थर है जो ओरिएंटल–पाश्चात्य विवाद में सफलतापूर्वक संतुलन बनाने में सक्षम था। चार्ल्स वुड ईस्ट इंडिया कंपनी के बोर्ड ऑफ कंट्रोल के अध्यक्ष थे। भारत में शिक्षा व्यवस्था में सुधार हेतु उन्होंने एक विस्तृत योजना तैयार की जिसे तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड डलहौजी द्वारा लागू किया गया। इसके तहत प्रावधान किया गया कि जनसामान्य तक शिक्षा के प्रसार की जिम्मेदारी भारत सरकार की होगी (जय गुप्ता)। इसके माध्यम से अधोगामी निस्पदन के सिद्धांत का विरोध किया गया। इसने पहली बार महिला शिक्षा हेतु प्रयास किया। इसमें सरकारी संस्थानों में दी जाने वाली शिक्षा को धर्म–निरपेक्ष बनाया गया। इसके तहत भारत के सभी राज्यों में शिक्षा विभाग की स्थापना का निर्देश दिया गया। इस अधिनियम के परिणामस्वरूप देश के तीनों प्रेसीडेंसियों (बंगाल, मद्रास तथा बॉम्बे) में एक एक विश्वविद्यालय स्थापित किया गया (मोहन लाल गुप्तारू वुड्स डिस्पैच और उसका प्रभाव) । अतः वुड्स डिस्पैच को भारतीय शिक्षा का मैगनाकार्ट कहा जाता है।

राम मोहन और विद्यासागर की पुर्नजागरण में भूमिका

राजा राम मोहन राय का योगदान

राजा राम मोहन राय आधुनिक भारत के पुनर्जागरण के जनक और एक अथक समाज सुधारक थे जिन्होंने भारत में ज्ञानोदय और उदार सुधारवादी आधुनिकीकरण के युग का उद्घाटन किया। इनका प्रभाव भारतीय इतिहास में सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक आदि क्षेत्रों में महसूस किया जा सकता है (गोरेन और रॉय, 2022)। राजा राम

मोहन राय ने भारतीय समाज में रूढ़ीवादिता और अंधविश्वास की कड़ी आलोचना की और समझाया की यही भारत के पिछड़ेपन का कारण है। सती प्रथा की अमानवीय प्रथा को खत्म करने में और विधवा पुनर्विवाह के लिए राम मोहन का भारतीय इतिहास में एक महान योगदान था। यह उनका एहसास था कि एक सुव्यवस्थित प्रगतिशील समाज तब तक नहीं बन सकता जब तक कि समाज के सदस्यों को शिक्षित नहीं किया जाता (चौधरी, 2021) राम मोहन ने समाज को नष्ट करने में सक्षम बनाने के लिए शिक्षा के प्रसार को सबसे शक्तिशाली हथियार के रूप में सावधानीपूर्वक चुना है। स्टीरियोटाइप विचार (रॉय एट अल., 2023)। वह शिक्षा के भी प्रणेता थे, उन्होंने भारतीय या पारंपरिक शिक्षा को पश्चिमी शिक्षा के साथ जोड़कर उसे फलने–फूलने का प्रयास किया। रॉय ने अपने देशवासियों तक आधुनिक शिक्षा का लाभ पहुँचाने के लिए बहुत कुछ किया। उन्होंने 1817 में हिंदू कॉलेज खोजने के डेविड हेयर के प्रयासों का समर्थन किया, जबकि रॉय के अंग्रेजी स्कूल में यांत्रिकी और बोल्टेयर के दर्शन पढ़ाए जाते थे। 1825 में, उन्होंने वेदांत कॉलेज की स्थापना की जहाँ भारतीय शिक्षा और पश्चिमी सामाजिक और भौतिक विज्ञान दोनों में पाठ्यक्रम पेश किए गए इसलिए, उनकी अटकलों ने उनके शैक्षिक विचारों को ओरिएंटल या ऑक्सिडेंटल तक सीमित नहीं रखा। उन्होंने पूर्वी और पश्चिमी विचारों (अधिकन और साहा, 2021 ए) को संश्लेषित करके भारतीय शिक्षा को समृद्ध करने के लिए नए शैक्षिक विचारों के लिए एक रास्ता बनाया था। उन्होंने भारतीय संस्कृति और समाज को अमानवीय सामाजिक सीमाओं से मुक्त कराने के लिए अपनी गहरी अंर्तदृष्टि और वैज्ञानिक सोच से समाज में मानवता और समानता स्थापित करने का प्रयास किया है। राजा राम मोहन राय की इसी विलक्षणता को देखते हुए – 'भारत में आधुनिक युग के उद्घाटनकर्ता' शीर्षक से अपने संबोधन में टैगोर ने राम मोहन को 'भारतीय इतिहास के आकाश में एक चमकता सितारा' कहा।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर का योगदान

विद्यासागर एक बंगाली संस्कृत पंडित, शिक्षक, समाज सुधारक, लेखक और परोपकारी थे। यह 19 वीं सदी (आधुनिक इतिहास में सामाजिक–धार्मिक सुधारों की सदी) के महानतम बुद्धिजीवियों और कार्यकर्ताओं में से एक थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा में सामाजिक परिस्थितियों में महिलाओं के लिए गरिमा और सम्मान लाने की शक्ति है (डिस 2021)। उनके शैक्षिक विचारों में समाज सुधार में स्त्री शिक्षा को सर्वाधिक प्राथमिकता दी गई है। एक शिक्षाविद के रूप में 1846 में विद्यासागर सहायक सचिव के रूप में संस्कृत कॉलेज में शामिल हुए। एक साल के भीतर उन्होंने मौजूदा शिक्षा प्रणाली में कई बदलाव लाए। संस्कृत कॉलेज के प्राचार्य के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान, विद्यासागर ने प्रशासन और शिक्षा दोनों में अभूतपूर्व परिवर्तन शुरू किए। उन्होंने हुगली मिदनापुर, बर्दवान और नादिया में 20 मॉडल स्कूल स्थापित किए। (जफर.एम, 2014)। इस परोपकारी व्यक्ति ने लोगों को शैक्षिक अवसर उपलब्ध कराने और विशेष रूप से गरीबों और वंचितों को शिक्षा के दायरे में शामिल करने के लिए अथक प्रयास किया। महिलाओं की सामाजिक स्थिति अथक संघर्ष का ही परिणाम था कि तत्कालीन भारत सरकार ने 1856 में विधवा पुनर्विवाह अधिनियम पारित किया। (सिकदार, पी और हाल्डर, 2020) हिंदू समाज के रूढ़िवादी शक्ति केंद्रों के खिलाफ खड़े होकर विद्यासागर ऐसे व्यक्ति थे जो अपने समय से बहुत आगे थे। (धारा और बारिक 2021) जब हमारा समाज पापों, अंधविश्वासों, अशिक्षा और अचेतनता से भरा हुआ था। विद्यासागर को सूर्य की तरह उस रुढ़िवादी समाज में प्रकाश डालने के लिए उभारा गया था। उन्होंने पौराणिक कथाओं से कहानियों के नामकरण के माध्यम से भारतीय कला और प्रतिमा विज्ञान (अधिकारी और साहा, 2021डी: 2022) में मूल्य शिक्षा के महत्व पर भी जोर दिया और अपने समकालीन राजा रवि वर्मा (अधिकारी और साहा 2021) की पौराणिक कथाओं की सचित्र व्याख्याओं की भी प्रशंसा की। यह चरण वह समय भी था जब विद्यासागर और राममोहन से प्रेरित महिला शिक्षाविदों और सुधारकों ने महिला शिक्षा की प्रगति के लिए चुनौतीपूर्ण गतिविधियों का नेतृत्व किया (अधिकारी और साहा, 2021बी)

निष्कर्ष

ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली के प्रति भारत के इतिहास में दिए गए सालों के दौरान हमने कई महत्वपूर्ण योगदान और प्रतिबद्धता देखी है, लेकिन यह उसका मतलब नहीं है कि इसका पूरा प्रतिकूल था। ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली ने

भारत में विशेषतः पूर्व भूमिका के तौर पर, ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली का प्रयास भारत में शिक्षा के क्षेत्र में विकसन और सुधार का एक महत्वपूर्ण चरण था। हालांकि यह प्रणाली कुछ सकारात्मक परिणाम भी लाई, जैसे कि अंग्रेजी भाषा का प्रचार और तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में विकास, वह भारतीय समाज और शिक्षा प्रणाली पर भारी प्रभाव डाली। इस प्रणाली ने भारतीय समाज में भाषा, सांस्कृतिक धरोहर और परम्पराओं को क्षति पहुंचाई, और शिक्षा को विदेशी नियमों और प्राथमिकताओं के अनुसार संरचित किया। इसके परिणामस्वरूप, ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली को भारत में सुनिश्चित रूप से समाप्त कर दिया जाना चाहिए, ताकि हम समृद्धि, उद्यमिता, और भारतीय संस्कृति के मूल्यों को महत्वपूर्ण स्थान पर रख सकें। राजा राम मोहन राय और विद्यासागर की शिक्षा में योगदान का संक्षेप में निष्कर्ष यह है कि उन्होंने भारतीय समाज को मॉडर्न शिक्षा के महत्व को समझाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने विशेष रूप से इंग्लैंड की शैक्षिक प्रणाली को भारत में प्रस्तुत करने का प्रयास किया और विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा देने के लिए प्रयास किया। उनका शिक्षा क्षेत्र में योगदान आज भी महत्वपूर्ण है और उनकी शिक्षा के कार्य को महान माना जाता है।

संदर्भ सूची

1. अधिकारी, ए. और साहा, बी. (2021ए), एंड देयर वाज़ लाइट रेनेसां एंड द पायनियर्स ऑफ एजुकेशन, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ करंट एडवांस्ड रिसर्च,* 10(8), 25000–25003
2. अधिकारी, ए. और साहा, बी. (2021बी) कम ज्ञात भारतीय महिला शिक्षक और सुधारक, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एंड रिव्यू,* 8 (9), 442–447।
3. गुहा, रणजीत. (2015) *पूर्वदेशी और पश्चिमदेशी समाजशास्त्रिय दृष्टिकोण,* वाचनिक प्रकाशन, मुंबई.
4. अधिकारी, ए. और साहा, बी. (2023ए) प्रोजेक्टिंग सॉफ्ट पावररू द केस ऑफ इंडिया, *एशियन जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड सोशल स्टडीज,* 38(4), 1–6।
5. अधिकारी, ए. और साहा, बी. (2023बी) भारतीय इतिहासलेखन के अनेक संसार, *एशियन जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड सोशल स्टडीज,* 39(3), 48–53
6. चौधरी, डी. (2021), आधुनिक भारत के निर्माण के लिए राजा राममोहन राय का सामाजिक–शैक्षिक दृष्टिकोण, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स (आईजेसीआरटी),* 9(1), 2778–2786
7. *ईपीआरए इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एनवायर्नमेंटल इकोनॉमिक्स, वाणिज्य एवं शैक्षिक प्रबंधन,* 10(4), 1–4. दास, टी. (2021), महिला शिक्षा में पंडित ईश्वर चंद्र विद्यासागर का योगदान, क्रिएटिव रिसर्च के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल विचार (आईजेसीआरटी), 9(1), 4377–4382।
8. ड्लुआरा, आर. और बारिक, ए. (2021) *19 सेंचुरी इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ऑल रिसर्च एजुकेशन एंड साइंटिफिक मेथड्स (IJARESM),* 9(1), 904–909 में शैक्षिक और सामाजिक सुधारक के रूप में पंडित ईश्वर चंद्र विद्यासागर का योगदान।
9. सेन, एस. (2023) शिक्षा में प्रकार्यवाद, समाजवाद और नारीवाद, *ईपीआरए इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च (आईजेएमआर)* 9(4), 115–117।
10. वेनिला, जी. (2018) मद्रास प्रेसीडेंसी के विशेष संदर्भ में भारत में अंग्रेजी शिक्षा की शुरूआत, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स।*
11. सिकदर पी और हलदर टी (2020), विद्यासागर शिक्षा जर्नल ऑफ इंफॉर्मेशन एंड कम्प्यूटेशनल के सुधारक के रूप में, *विज्ञान,* 10(1), 840–853 10,।
12. जफर एम. (2014) *सोशल रिफॉर्म इन कोलोनियल बंगाल रीविज़िटिंग,* विद्यासागर फिलॉसफी एंड प्रोग्रेस खंड।

****